225hi03

शृंगार

जैन लघुचित्र

टिप्पणी

रासलीला

टिप्पणी

जाती हैं। इनको आग में तपाकर पक्की मिट्टी की तरह ही बनाया जाता है।

'रासलीला' में राधा–कृष्ण के दिव्य प्रेम को उनके साथी गोप तथा गोपियों के सान्निध्य में दर्शाया गया है। इस सुन्दर फलक का एक चौकोर स्थान पर तीन गोलों को केन्द्रित कर संयोजन किया गया है। इन तीन गोलों में से बीच के गोले में एक गोपी के साथ राधाकृष्ण की आकृतियां दिखाई गई हैं। शेष दो गोलों में कुछ आकृतियां एक–दूसरे के हाथ पकड़े दिखाई गई हैं। चौकोर के चारों कोनों को मानव, पशुओं तथा चिड़ियों की आकृतियों से सजाया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. विष्णुपुर कहाँ है?
2. विष्णुपुर के मन्दिर कैसे सजाए गए हैं?
3. पक्की मिट्टी से बने इन मन्दिरों में बनाई गई आकृतियां क्या दिखाती हैं?
4. इस शैली के विकास का क्या समय था? उसका वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

संरक्षकों के अभाव में कला का विकास अवश्य प्रभावित होता है परन्तु इससे कलाकार की स जनात्मकता में कमी नहीं आती। 12वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला की स्थिति यही सिद्ध करती है। इस काल में कला शैली में काफी परिवर्तन हुए। परिणाम स्वरूप इस काल में कलाचित्र का आकार जैन, बौद्ध तथा हिन्दू पाण्डुलिपियों के चित्रों की तरह छोटा हो गया। राजपूत तथा मुगल कलाकृतियाँ भी आकार में छोटी हैं। आकार में छोटे होते हुए भी सौंदर्य एवं तकनीकी द ष्टि से इन चित्रों का स्तर काफी ऊंचा है।

लघु चित्रों के साथ–साथ भारत के पूर्वी भाग में टेराकोटा की बनी उच्चावच कृतियाँ (Relief works) विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुईं। बहुत–से मन्दिर इन टाइल्स से सजाए गए हैं।

पाठांत अभ्यास

1. 12वीं शती (AD) के बाद कला के विकास का विवरण दीजिए।
2. टेराकोटा क्या है? उस मन्दिर का वर्णन करें जिसमें टेराकोटा की टाइल्स लगाई गई हैं।